शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648

वर्ष - 03 अंक– 11 जुलाई - सितंबर - 2025 Impact factor– 03

'लोकनायक युगे युगे' नाटक में धार्मिक समानता

डॉ. लक्ष्मण भोसले

सह प्राध्यापक- हिंदी विभाग

सरकारी प्रथम श्रेणी महाविद्यालय, जेवर्गी-585310, गुलबर्गा जिला, कर्नाटक.

सारांश-डॉ. बलदेव वंशी द्वारा रचित नाटक **'लोकनायक युगे युगे'** स्वामी रामानंद को कलियुग का **लोकनायक** और विष्णु का अवतार मानकर प्रस्तुत करता है। नाटक रामानंद के जीवन, गुरुभक्ति, समाज सुधार और भक्ति प्रचार पर केंद्रित है। रामदत्त से रामानंद बने इस ब्राह्मण बालक ने जाति, धर्म, वर्ण और लिंग भेद मिटाकर सभी को भक्ति का द्वार खोला। उनके 12 पुरुष शिष्यों (जैसे कबीर, रविदास, पीपा, धना) और दो महिला शिष्यों (पद्मावती, सुरसरी) के माध्यम से समानता का संदेश फैलाया। नाटक दक्षिण से उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के प्रसार, गुरु महिमा, दीन-दलितों के उद्धार, नारी स्वाभिमान और वर्तमान समस्याओं (महंगाई, भ्रष्टाचार, धार्मिक नफरत) की आलोचना को जोड़ता है। यह भगवद्गीता के "यदा यदा हि धर्मस्य... संभवामि युगे युगे" से प्रेरित होकर राम, कृष्ण की तरह रामानंद को युग सुधारक दिखाता है।

बीज शब्द:-स्वामी रामानंद,लोकनायक युगे युगे,धार्मिक समानता,जाति-वर्ण भेद मिटाना,रामानंदी संप्रदाय,गुरुभक्ति,भक्ति आंदोलन,दीन-दलित उद्धार,नारी समानता,कलियुग सुधार,राघवानंद,कबीर-रविदास,पद्मावती-सुरसरी,महंगाई-भ्रष्टाचार,संघे शक्ति कलयुगे ।

मूल आलेख :-रामदत्त ही रामानंद बने-आचार्य रामानंद जी का जन्म उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद के पास मलिकोट नामक गाँव में ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनका बचपन का नाम रामदत्त था। जन्म सन् 1299 ईसवी में और मृत्यु सन् 1410 में हुई। इस प्रकार स्वामी रामानंद 111 वर्ष का लंबा जीवन जीकर, अपने दीक्षागुरु आचार्य राघवानंद की समाजसुधार की आकांक्षा अपनी कर्मशक्ति से पूरी की। इन्होंने 'आनंदभाष्य' नामक ग्रंथ की रचना की।

गुरु महिमा-भक्ति साहित्य में गुरु को भगवान से श्रेष्ठ माना गया है। स्वामी रामानंद जी की भी इस नाटक में गुरुभक्ति स्मरणीय है। रामानंद कहते हैं— 'परम ब्रह्म (गौड) संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त होता है, जिसका परिचय केवल गुरु ही दे सकता है।' अतः गुरु का महत्व सबसे ऊँचा है। मनुष्य का मन अस्थिर रहता है और गुरु की कृपा से ही मन की चंचलता मिट जाती और सही मार्ग से चलकर भगवान तक पहुँच सकता है। गुरु ही मनुष्य के सभी भ्रमों को मिटा देता है।

नाटक का परिचय-'लोकनायक युगे-युगे' इस नाटक में नाटककार डॉ. बलदेव वंशी जी ने जाति-धर्म के भेदभाव को मिटाकर पूरे मानव कुल को समानता का संदेश दिया है। त्रेता युग, द्वापर युग में जिस प्रकार राम और कृष्ण ने विष्णु का अवतार धारण कर के मानव कुल को सुधारने और संवारने का काम किया, उसी प्रकार स्वामी रामानंद ने कलियुग में विष्णु का ही अवतार धारण कर के संपूर्ण मानव जाति का उद्धार करने का महत्वपूर्ण काम किया है। आचार्य स्वामी रामानंद ही 'लोकनायक युगे युगे' इस नाटक के नायक हैं। त्याग, सेवा, समानता, सहन—शीलता, दीन-दलितों से प्रेम आदि विशेष गुणों के कारण रामानंद जी कलियुग के लोक उद्धारक सिद्ध हुए हैं। हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध आदि धर्मों में ब्राह्मण-क्षत्रीय-वैश्य-शूद्र आदि वर्गों में तथा स्त्री और पुरुष में भी समानता स्थापित कर के एक महान समाज सुधारक के रूप में भी उभरकर आते हैं।

राघवानंद के शिष्य—राजामी रामानंद जी आचार्य राघवानंद के शिष्य हैं। रामानंद जी रामानंदी संप्रदाय की स्थापना कर के वैष्णव भक्ति का प्रचार करते हैं। श्री राम जी रामानंदी संप्रदाय के आश्रय देव हैं। स्वामी रामानंद जी के कुल बारह शिष्य हैं—अनंतानंद, सुरसुरानंद, सुखानंद, नरहरयानंद, भवानंद, योगानंद, गालवानंद, संत रविदास, संत कबीर, संत पीपा, संत धना और संत रौठा। इनके अतिरिक्त दो महिला शिष्य भी थे—पद्मावती और सुरेश्वरी।

भक्ति दक्षिण उपजी, लाये रामानंद जैसे कि हम सभी जानते हैं कि तेरहवीं शताब्दी में जो भक्ति परंपरा दक्षिण भारत में सुरु हुई वही भक्ति स्वामी रामानंद के द्वारा पूरे उत्तर भारत में फैल जाती है। दक्षिण के अलावर संत, महाराष्ट्र की वारकरी परंपरा, बंगाल के वैतन्य, महाप्रभु तथा पंजाब के गुरु नानक देव आदि सभी ने मानव कुल को सुधारने में अपना—अपना योगदान भक्ति द्वारा ही दिया है।

महान कार्य-आचार्य स्वामी रामानंद जी ने दीन-दलितों का उद्धार करके साथ ही नारी में स्वाभिमान की भावना जगाकर समाज में एक आदर्श तो स्थापित करते ही हैं साथ ही साथ उच्च वर्णियों द्वारा निम्न वर्गों के प्रति जाने अंजाने में किए—गये अच्याय अत्याचारों के प्रति क्षमा याचना करके एक यथार्थ भी स्थापित करते हैं। इस प्रकार रामानंद जी सच्चे अर्थों में लोक के महानायक के रूप में उभरकर आते हैं।

शीर्षक की सार्थकता

छो. बलदेव वंशी जी ने अपने 'लोकनायक युगे युगे' नाटक का नामकरण भगवद्गीता के 'संभवामिग्युरुयोगे' के आधार पर किया होगा, इसमें कोई शक नहीं 'संभवामिग्युरुयोगे' और 'लोकनायक युगे युगे' दोनों शीर्षकों का अर्थ है कि जब—जब इस पूलोक के मानव समाज में पाप-अधर्म-आमानवीयता अधिक होगा तब—तब भगवान स्वयं मनुष्य के रूप में अवतार धारण करके मानव कुल को संवारने—सुधारने का महान कार्य करेंगे। राम, कृष्ण, मोहम्मद पेग़बर, ईसा मसीह, गुरु शंकराचार्य, बुद्ध, रामानंद, अन्वेडकर जैसे अनेकों का जन्म इस धरती पर तत्कालीन मानवकुल के महानायकों के रूप में ही हुआ था।

फूलों की चोरी-

वालक रामानंद वचपन में अपने गुरु दण्डी स्वामि के लिए आचार्य राघवानंद के आश्रम से फूल चुराकर गुरुसेवा में समर्पित करते थे। चोरी का भाव रामानंद को एक साधारण मनुष्य के रूप में व्यक्त करता है। लेकिन चोरी को ज्यों-का-त्यों मान लेना उन्हें साधारण व्यक्ति नहीं बल्कि असाधारण बनाता है, विशेष बनाता है, महान बनाता है।

"मैं, मैं चोर नहीं हूँ, गुरु जी। मेरा नाम रामदत्त है। मैं यहीं पास में दण्डी संन्यासी की कुटिया में उनकी रोवा में रहता हूँ। मैं अपने गुरु जी के लिए फूल ले जाता हूँ। उन्हें पूजा के लिए फूल चाहिए।"

भक्तों को समानता का संदेश-

स्वामी रामानंद जी अपने आश्रम श्रीमत पंच गंगा घाट में वैठकर प्रवचन करते हैं। उनके सामने अनेक भक्त वैठकर प्रवचन सुनते हैं। लोक नायक रामानंद जी बताते हैं— "सूर्य की किरणों पर सबका समान अधिकार है। वायु बिना किसी रोक टोक के सबके श्वासों में प्राण भरता है। पुष्प सब पर अपनी सुगंध वरावर लुटाते हैं।" गलती के लिए क्षमा **प्रार्थना-**

15–16 वर्ष का बालक जब आचार्य राघवानंद के आश्रम में फूलों की चोरी करते पकड़ा जाता है— तब तुरंत क्षमा याचना करता है— "मुझे क्षमा करें, गुरु जी। मेरी भूल क्षमा कर दें। मैं नासमझी मैं यह कुकर्म

करता रहा। मुझे शाप न दें। मैं अपनी सासों तक आपकी सेवा करूँगा।" बालक रामदत्त के इन शब्दों को सुनकर गुरु राघवानंद जी मन ही मन में सोचने लगते हैं— "अभी इस बालक की आयु ही कितनी है। यह अभी कलिरूप है। बड़ी होनहार आत्मा है, इसे यदि अवसर मिल जाए, तो समूची धरती को महकाने की क्षमता है इसमें।"

रामदत्त का घर त्यागना व माता-पिता को दुःख होना—बालक रामदत्त घर छोड़कर जानेवाला है। इसे जानकर उनके माता पिता को बड़ी चिंता होने लगती है। तब रामदत्त सोचता है— "माता-पिता संतान को पाल-पोसकर बड़ा करते हैं। उससे उन्हें कई उम्मीदें-अपेक्षाएँ होती हैं। जब उनकी अपेक्षाएँ पूरी नहीं होती, तो उन्हें बड़ा दुःख होता है। इस प्रकार मानव स्वयं ही अपने दुःख को जन्म देता है। लेकिन दुःख ही मानव को परिपूर्ण मनुष्य बनाता है। दुःख न हो तो जीवन का कोई अर्थ ही नहीं रहेगा। जीवन जीने का स्वाद खो जायेगा। रामानंद जी की माता जी उसे घर छोड़कर जाने के लिए अनुमति देते हुए कहती है— "ठीक है राम। तुम जाओ। तुम्हें नहीं रोकती। यह तो प्रकृति का नियम है। वृक्ष के प्राणों में जन्मी सुगंध तक वृक्ष को छोड़कर हवा के साथ हो लेती है। तुम भी प्रकृति का नियम पालन करो।" संतान और माँ का नाता सबसे गहरा होता है। नौ मास गर्भ में रहते दोनों एक साथ पीड़ाएँ छोलते हैं। इस संदर्भ में जब पिताजी की आँखों में पानी आने लगता है, तो अपने आपसे कहने लगते हैं— "अपने आँसू बाहर मत आने दो। बाहर तो बच्चों और स्त्रियों के आँसू गिरते हैं। पुरुषों के आँसू भीतर गिरते हैं। कमजोर पुरुष किसी के काम का नहीं रहता। न अपने काम का और न देश के काम का।" बालक रामदत्त के विचार में जन्म देनेवाली माँ, भारत माँ, और पूरी प्रकृति माँ तीनों समान हैं। अतः माता पिता के चरणों पर एक-एक हाथ रखकर दोनों के आगे सिर नवा देता है और उनसे विदाई लेता है।

आज की समस्या भ्रष्टाचार व मंहगाई—नाटककार डॉ. वलदेव वंशी जी ने अपने लोकनायक युगे युगे इस नाटक में समाज में व्याप्त (फैली) मंहगाई को वहुत ही सरल ढंग से व्यक्त किया है। इलाहाबाद के चौराहे पर सुख्खू भाई की चाय की दुकान है, जहाँ पीटर, रामखेलावन, रफीक अहमद, सुद्धवा नामक मित्र चाय पीने आते हैं। उनमें धार्मिक, भेदभाव नहीं है। रफीक अहमद बड़े दिलदार आदमी हैं। हिंदुओं और ईसाइयों से बड़ी मोहबत से बाते करते हैं। रामखेलावन, रफीक अहमद, पीटर और सुद्धवा का चाय की दुकान पर संवाद सुनिए।

रामखेलावन : अरे भाई हमें भी चाय पिलाओ मियाँ रफीक।

रफीक : चाय मीठी पीयोगे या फीखी?

रामखेलावन : भाई अब चाय न तो मीठी रही, न फीकी। यह तो कड़वी हो गई है। इतनी मंहगी। चीनी, पचास रुपये किलो। गरीबों का तो अब मरण है। पीटर : रफीक भाई सलाम। राम् भाई राम-राम।

रफीक : पिछले दस-बीस बरसों (दशक) से लगातार सभी चीजें मंहगी होती जा रही हैं। लगता है बाजार में आग लगी है।

पीटर : अब तो लूट मार मची है। जो सरकार आती है लगता है सदियों के भुक्खड़ आ गये हैं। बेहयाई से लूटते हैं। इनका पेट है कि कुंआ, भरता ही नहीं। रामखेलावन : इनमें मानवता तो रही नहीं। ये जन रक्षक नहीं, जन भक्षक हैं। "उपर्युक्त संवादों में पढ़ने पर लगता है कि आज की मंहगाई और राजनेताओं का अमानवीय भ्रष्टाचार गरीबों का जीना ही हराम कर दिया है। कहीं न्याय नहीं, कहीं ईमानदारी नहीं, कहीं अच्छे दिनों की उम्मीद जगती नहीं, जीवन ही भयानक बना है। इनसान जो गरीब है, परेशान है और जो अमीर-बुद्धिमान है सैतान बन बैठा है। अमीर और गरीबों के बीच की खाई (का अंतर) कम होने के बजाय और अधिक बढ़ती जा रही है।

गरीब-दीन-दलितों में असमाधान-इलाहाबाद के बाहर की एक मलिन बरती में मजदूर, कारीगर जैसे गरीब हिंदू-मुसलमान रहते हैं। वहाँ के लोगों का ईश्वर पर से भरोसा टूट गया है। उनका जीवन मौत से बदतर बना हुआ है। वे सोचते हैं— "मौत की भयानक खाई में कूदने से पहले हम भरसक हाथ पैर मारते हैं कहीं कोई सहारा मिल जाये। हमें नहीं तो हमारे बच्चों को ही किनारा मिल जाये। पर नहीं लगता है, हमारा भगवान सोया है। हमारा अल्ला वेखबर है। वह अंधा, बहरा और क्रूर है।"

विमर्श के विविध आयाम-"हम अपने देश-काल-जीवन से विचित्र हैं, आज कोई हमारी सुख लेनेवाला नहीं। कोई देव, कोई मानव, कोई समाज, कोई संत नहीं, हम हताश हो चुके हैं।"

इस प्रकार जीवन की उम्मीद खोये लोगों के नायक के रूप में स्वामी रामानंद जी इस नाटक में दीन दलितों के दाता बनकर, मानवता के पुजारी बनकर, धर्म-जाति-वर्ण के विरोधी बनकर आये हैं। हताश-निराश जनता को उनका मार्गदर्शन देखिए— "संघे शक्ति कलयुगें। अर्थात् संघटना ही इस कलियुग में सबसे बड़ी शक्ति है। और वे आगे कहते हैं— "कलयुग में इक (एक) नाम आधार" अर्थात् कलियुग में मनुष्य को सारे कष्टों से उभारने वाला, दीन-दलित-कमजोर लोगों का सहारा केवल भगवान का नामस्मरण ही होगा। आचार्य रामानंद जी साधारण लोगों को समझाते हैं कि परमात्मा का सदैव स्मरण करते हुए अपनी अपनी आत्माओं में झाँकना और आत्मिक रूप से सभी का जुड़ना ही एक मात्र सहारा होगा।

सारी दैवी शक्तियाँ जगे हुओं का साथ देती हैं। निष्क्रिय, दुर्बलों, कायरों, खण्ड-खण्ड विश्वरे हुओं का नहीं। आज फिर आप सब तिनका-तिनका विश्वर गये हो। फिर वही नफरत, फिर वही हिन्दू-मुसलमान का भेद, फिर वही फसाद, खुन खराब। तमी तुम्हारे दुःख बढ़े हैं। जीवन नरक बन गया है। इस प्रकार धार्मिक नफरत और जातीयता के भेदभाव के कारण मनुष्य मनुष्य का दोस्त नहीं बल्कि दुश्मन बनकर एक-दूसरे के दुःख का कारण बन रहा है।

रामानंद के प्रवचन का दलितों पर प्रभाव

गाँव के बाहर दलित बस्ती में गरीब दलित आपस में बाते करते हैं। धूर्त लोगों ने हमें कई तरह से बांट रखा है। तू बामन है। तू क्षत्रीय है। तू वैश्य है। तू शुद्ध है। रेदासी (वमार) लोग सोचने लगते हैं— "हम तो सवर्णियों के पाँवों की रक्षा के लिए जुतो बनवाते हैं लेकिन वे श्रीमान हमारे बनाये जुतो तो पहनते हैं पर हमें अछूत मानते हैं। हमें अपने जुतों के बराबर भी नहीं समझाते। अब यह नहीं चलेगा।" एक नाई कहता है— "हमसे तुड़ड़ी तो मुड़वाते हैं पर हमारी तुड़ड़ी देखने से इनका धरम भ्रष्ट हो जाता है। यह राब नहीं चलेगा। ऐसी बेइज्जती। ऐसी नफरत। खून खीलता है। कलेजा फटता है।" इस प्रकार दलितों में आत्माभिमान या स्वाभिमान जागने का महान कार्य स्वामी रामानंद और उनके शिष्यों ने किया। इसलिए रामानंद सच्चे अर्थों में लोकनायक हैं।

संत पद्मावती और सुरसरी का महिलाओं को संदेश

आचार्य रामानंद के बारह (12) पुरुष शिष्यों के अतिरिक्त दो (2) नारी शिष्याएँ थीं— संत पद्मावती और संत सुरसरी। स्त्री और पुरुषों को समान रूप से अपने शिष्यों के रूप में अपनाकर स्वामी रामानंद जी ने सारे संसार को समानता का संदेश देते हैं। धर्म-जाति-वर्ग-वर्ण-स्त्री-पुरुष जैसे अनेक भिन्नताओं को

समाज से निकालना लोकनायक रामानंद का उद्देश्य था। गुरु के इस महान कार्य को सफल बनाने में उनके शिष्यों ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे अपने प्रवचनों से दीन-दलितों में आत्माभिमान जगाने का प्रशंसनीय कार्य किया। पंच गंगा घाट पर रामानंदी संप्रदाय द्वारा स्थापित "स्वाधीन नारी सतसंग मंडल" की सदस्याएँ हैं— पद्मावती

और सुरसरी। वे साधारण महिलाओं को नाम स्मरण एवं भक्ति द्वारा जीवन मुक्ति का सरल मार्ग बताती हैं। एक महिला पूछती है— हम अपने गृहस्थी जीवन में अध्यात्मा का उपयोग कैसे करें? तब संत सुरसरी बहुत ही सरल उदाहरण देकर इस प्रकार समझाती है— "जिस प्रकार पानी से भरा गागर अपने सिर पर रखकर साथ चलनेवाली सखी—सहेलियों के साथ बातचीत करते हुए हंसती—खिलखिलाती हुई भी तुम रास्ते पर निश्चित चल सकती हो रास्तों तथा गागरों—दोनों पर आपका ध्यान बराबर लगा रहता है। हंसी—खिलखिलाहट में पानी की गागर से लापरवाह नहीं करतीं। इसी प्रकार अपना प्रत्येक घरेलू काम—काज करते हुए भी प्रभु को अनदेखा नहीं करे। जिसने जगत का निर्माण किया, उसे भी सबके साथ देखे। यही सम्यक दृष्टि है। संतों की अध्यात्मा दृष्टि ऐसी होती है।

निष्कर्ष-नाटक का मुख्य संदेश मानव समाज में व्याप्त भेदभाव, अन्याय और अधर्म के विरुद्ध **समानता, भक्ति और संघटन** की शक्ति है। स्वामी रामानंद को युग-युग में अवतरित होने वाले लोक उद्धारक के रूप में चित्रित कर नाटककार यह स्थापित करते हैं कि कलियुग में भी राम-कृष्ण जैसे महानायक जन्म लेते हैं, जो त्याग, सेवा और प्रेम से समाज को नई दिशा देते हैं। वर्तमान की महंगाई, भ्रष्टाचार और धार्मिक विभेद जैसी समस्याओं को रामानंद के प्रवचनों से जोड़कर नाटक आज के समाज को आत्मचिंतन और सुधार का आह्वान करता है। अंततः यह भक्ति को सभी वर्गों के लिए सरल और समावेशी मार्ग बताता है, जहां गुरु कृपा और नाम स्मरण से मुक्ति संभव है।

*****

संदर्भ सूची:-

1. प्रदान किया गया पाठ: 'लोकनायक युगे युगे' नाटक का विस्तृत विवरण और अंश (उपयोगकर्ता द्वारा साझा)।
2. स्वामी रामानंद का जीवन परिचय: भारतकोश (bharatdiscovery.org) और विकिपीडिया (hi.wikipedia.org/wiki/रामानन्द)।
3. भगवद्गीता श्लोक 4.7-4.8: "यदा यदा हि धर्मस्य... संभवामि युगे युगे" – गीता सुपरसाइट (gitasupersite.iitk.ac.in) और अन्य स्रोत।
4. डॉ. बलदेव वंशी का परिचय: विकिपीडिया (hi.wikipedia.org/wiki/बलदेव_वंशी) और भारतकोश (bharatdiscovery.org)।